2 अगस्त 2016

नाटो वारसॉ शिखर सम्मेलन: परिणाम और निहितार्थ

*डॉ दिनोज के उपाध्याय**

परिचय

27 वां उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) शिखर सम्मेलन 8-9 जुलाई 2016 को वारसॉ, पोलैंड में आयोजित किया गया था। इसे एक "ऐतिहासिक"[1] शिखर सम्मेलन कहा गया था, यह यूरोप और उससे आगे के देशों की सुरक्षा नीति के अगले क्रमों को तय करने के लिए नाटो के सदस्य-राज्यों की एक महत्वपूर्ण बैठक थी। व्यापक तौर पर, वारसॉ शिखर सम्मेलन का तथाकथित उद्देश्य 'गठबंधन के निरोध तथा रक्षा को सुदृढ़ और इसकी सीमा से आगे भी स्थिरता की योजना बनाकर गठबंधन की सुरक्षा को बढ़ाने' पर एक निर्णय लेना था।[2] पूर्वी यूरोप, मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका में राजनीतिक और सुरक्षा स्थिति से संबंधित कई मुद्दों से लेकर रूस, अफ़गानिस्तान के साथ संबंधों और साइबर सुरक्षा सहित गैर-पारंपरिक सुरक्षा खतरों, और नाटो-यूरोपीय संघ (ईयू) के सहयोग पर नीतिगत अभिविन्यास के भविष्य के क्रमों जैसे कई मुद्दों पर चर्चा की गई। पूर्वी यूरोप में सुरक्षा स्थिति और रूस के साथ संबंध नाटो के एजेंडे का सबसे प्रमुख मुद्दा था। पोलैंड और बाल्टिक राज्य पूर्वी यूरोप में रूस की "मुखरता" का मुकाबला करने के लिए सैन्य उपायों की घोषणा की उम्मीद की जा रही थी। वे अक्सर रूसी सैन्य निर्माण, अभ्यासों और इसके 'अमुक्त विचारधारा' को लेकर अपनी समस्याओं के खिलाफ आवाज उठाते हैं।[3] रूस द्वारा क्रीमिया के राज्य-हरण के बाद 2014 में हुए पिछले वेल्स शिखर सम्मेलन में, नाटो देशों ने इस क्षेत्र में सुरक्षा चुनौतियों का समाधान करने के लिए उपाय किए थे। हालांकि नाटो के दृष्टिकोण में निरंतरता बनी हुई है, पर राजनीतिक परिदृश्य भी अपेक्षाकृत रूपांतरित हुए हैं। यूरोपीय संघ की सदस्यता पर यूके जनमत संग्रह के परिणाम ने यूरोपीय

संघ की राजनीतिक गतिशीलता को अस्थिर कर दिया है। हालांकि, इससे यूरोप की सुरक्षा संरचना प्रभावित होने की संभावना नहीं है। नाटो और यूरोपीय संघ ने आपसी सहयोग पर बल दिया।

शिखर सम्मेलन के दौरान पड़ोसी यूरोपीय और उससे आगे के देशों से उत्पन्न होने वाली सुरक्षा समस्याओं को भी संबोधित किया गया। इराक एवं शाम का इस्लामी राज्य (आईएसआईएल), अफ़गानिस्तान, मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका में राजनीतिक अस्थिरता भी नाटो देशों के लिए सुरक्षा चुनौतियों का कारण है। सीरिया और इराक के युद्ध के कारण बड़ी तादाद में आबादी का विस्थापन हुआ है, जिससे यूरोप में प्रवासी संकट पैदा हो गया। हाल के महीनों में लीबिया के ज़रिए प्रवासियों के अंतर्प्रवाह में वृद्धि हुई है। इटली के तटों तक पहुंचने के जोखिम भरे प्रयासों में हजारों प्रवासी डूब गए।[4] यूरोपीय देशों ने इस संकट से निपटने और लीबियाई क्षेत्रों और भूमध्य सागर में सक्रिय मानव सौदागरों और तस्करों के नेटवर्क पर अंकुश लगाने के लिए नाटो से मदद मांगी। यूरोपीय संघ ने लीबिया के प्रति सतर्कता से काम किया और सुरक्षा क्षेत्र में सुधार और आर्थिक सहायता प्रदान करने का वादा किया।[5] नाटो ने भूमध्य सागर में अपनी भूमिका बढ़ाने की सहमति व्यक्त की।

अफ़गान राष्ट्रीय सुरक्षा बलों को कमान सौंपने के बाद, अंतर्राष्ट्रीय सैनिक पीछे हट रहे हैं। नाटो ने 2016 के बाद देश में अपनी सैन्य उपस्थिति को और कम करने का निर्णय लिया था । हालांकि, वर्तमान की सुरक्षा स्थिति का आंकलन करने के बाद, नाटो ने अफ़गानिस्तान में लम्बे समय तक बने रहने की घोषणा की। ऐसे प्रकरण में, ये पेपर नाटो शिखर सम्मेलन के प्रमुख परिणामों और क्षेत्रीय राजनीतिक और सुरक्षा व्यवस्था के लिए इसके निहितार्थ का विश्लेषण करता है।

रूस की ओर रुख : निरोध और संवाद

जैसी आशा थी, नाटो ने पूर्वी यूरोप में अपनी सैन्य उपस्थिति बढ़ाने का फैसला किया। यूक्रेन संकट और उसके बाद के घटनाक्रमों के कारण रूस-पश्चिमी देशों के संबंध बिगड़ गए थे। नाटो ने 2014 में आयोजित वेल्स शिखर सम्मेलन में अपने सदस्य देशों की सुरक्षा को सुदृढ़ करने के लिए कई कदम उठाए, उदाहरण के लिए, वेल्स शिखर सम्मेलन में अपनाई गई रेडीनेस एक्शन प्लान (आरएपी) में बदली हुई सुरक्षा चुनौतियों के प्रति तेज और दृढ़ता से प्रतिक्रिया करने की बात की गई थी। वारसॉ शिखर सम्मेलन की शासकीय सूचना के नोट्स में कहा गया था, *"... रूस की हालिया गतिविधियों और नीतियों ने स्थिरता और सुरक्षा को कम किया, अप्रत्याशितता को बढ़ाया है, और सुरक्षा वातावरण को बदल दिया है।"* शासकीय सूचना में आगे ये भी बताया गया है कि बाल्टिक और ब्लैक सागर क्षेत्रों में सुरक्षा स्थितियां बदल गई हैं। नाटो ने आरएपी के उपायों को लागू किया है, जैसे कि, नाटो रिस्पांस फोर्स (एनआरएफ) को बढ़ाना, बहुत उच्च तत्परता संयुक्त कार्य बल (वीजेटीएफ) का निर्माण करना, प्रबलीकरण क्षमता को बढ़ाना , स्थायी नौसेना बलों में वृद्धि, त्वरित निर्णय लेने की प्रक्रिया, अभ्यास कार्यक्रम, हाइब्रिड युद्ध नीति के लिए रणनीति बनाना आदि।[6]

वारसॉ शिखर सम्मेलन में, नाटो के नेताओं ने पोलैंड और बाल्टिक राज्यों में चार 'बटालियन के आकार के युद्ध समूहों' को तैनात करने पर सहमति व्यक्त की। इन बहुराष्ट्रीय बलों को चक्रीय आधार पर तैनात किया जाएगा। अमेरिका ने पोलैंड में 1000 सैनिक उपलब्ध कराने पर सहमति व्यक्त की है। यूएस, यूके, जर्मनी और कनाडा 'रूपरेखा देने वाले राष्ट्रों ' के रूप में काम करेंगे। अमेरिका पोलैंड में बटालियन भेजेगा। अन्य नाटो सदस्य भी बाल्टिक में बटालियन भेजेंगे, उदाहरण के लिए, जर्मनी और यूके क्रमशः लिथुआनिया और एस्टोनिया के लिए बटालियन रवाना करेंगे। कनाडा ने भी सैनिक प्रदान करने का फैसला किया और यह एक अन्य बाल्टिक राज्य, लाटविया में अपने सैनिकों को भेजेगा। पोलैंड और बाल्टिक राज्यों का मानना है कि इस क्षेत्र में नाटो की सैन्य उपस्थिति रूस रूपक बढ़ते खतरे पर अंकुश कस देगी। शिखर सम्मेलन के बाद, पोलिश प्रधान मंत्री बीटा स्ज़ाइडलो ने कहा कि शिखर सम्मेलन के फैसले से देश की सुरक्षा बढ़ेगी।[7] लिथुआनिया के राष्ट्रपति, दालिया ग्रिबूस्काइते ने इस दिन को अपने देश और क्षेत्र की सुरक्षा के लिए एक 'ऐतिहासिक' दिन भी बताया।[8] अन्य दो बाल्टिक देशों से भी ऐसी ही प्र तिक्रिया आई।[9] कनाडाई प्रधान मंत्री जस्टिन ट्रूडो ने लाटविया के राष्ट्रपति रेमंड्स वेजोनिस से द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा करने के लिए मुलाकात की।[10] इसके विपरीत, रूस ने इसे 'आक्रामकता' पूर्ण कार्रवाई बताया। रूसी संघ परिषद के रक्षा एवं सुरक्षा समिति के प्रथ म उपाध्यक्ष, फ्रैन्ट्स क्लिंटसेविक ने कहा कि नाटो के फैसलों का वैश्विक स्थिति पर 'नकारात्मक प्रभाव' पड़ सकता है ।[11] इसी तरह, रूसी संसद के अपर हाउस के विदेशी नीति समिति के अध्यक्ष , कांस्टेनिन कोसचोव ने इसे "धोखे का शिखर सम्मलेन" बताया। उन्होंने कहा कि इस शिखर सम्मलेन में रूस पर झूठा आरोप लगाते हुए उसे एक खतरा बताकर अधिकांश फैसले लिए गए हैं।[12]

रूस के बारे में यूरोपीय राजनीतिक का प्रवचन केवल सैन्य दृष्टिकोण तक ही सीमित नहीं है। इसमें रूस के साथ बातचीत और सहयोग के लिए आवश्यक तत्व समाविष्ट है। नाटो के नेताओं ने रूस के साथ बातचीत करने की इच्छा व्यक्त की। नाटो महासचिव ने अपने शुरुआती संबोधन में कहा कि उनका रूस से 'अलग-थलग' करने का कोई इरादा नहीं है।[13] उन्होंने रूस से सहयोग मांगा। यूक्रेन संकट के बाद, नाटो ने रूस के साथ सहयोग करना बंद कर दिया है। लगभग दो वर्षों के अंतराल के बाद, नाटो-रूस काउंसिल (एनआरसी) की बैठक 20 अप्रैल, 2016 को आयोजित की गई थी, लेकिन इसमें कोई यथार्थ सफलता हासिल नहीं की जा सकी और ये समाप्त हो गई।[14] राजनीतिक रूप से, नाटो का ये भी कहना है कि "सैन्य घटनाओं या दुर्घटनाओं के नियंत्रण से बाहर जाने की जो खिम को कम करने के लिए' रूस के साथ 'रचनात्मक और सार्थक' वार्ता करना आवश्यक है।[15] 15 यूरोपीय नेताओं, फ्रांस के राष्ट्रपति हॉलैंड और चेक गणराज्य के राष्ट्रपति मिलोस ज़मैन[16] ने रूस के साथ संवाद करने का समर्थन किया। राष्ट्रपति हॉलैंड ने कहा, फ्रांस के लिए "रूस एक साझेदार है" और ना की 'खतरा'।[17]

हाल के रुझान दर्शाते हैं कि रूस और यूरोपीय संघ तनाव को कम करने की दिशा में बढ़ रहे हैं। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूरोप के साथ सहयोग बहाल करने का तर्क दिया। 17 जून 2016 को सेंट पीटर्सबर्ग अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मंच पर संबोधन करते हुए, राष्ट्रपति पुतिन ने कहा, "हमें कोई शिकायत नहीं है और हम अपने यूरोपीय साझेदारों से मिलने के लिए तैयार हैं। लेकिन यह निश्चित रूप से एकतरफा खेल नहीं हो सकता।"[18] पुतिन का भाषण संभवतः यूरोप के साथ तनाव कम करने की दिशा में एक बड़ा संकेत है। यूरोपीय आयोग के अध्यक्ष जीन-क्लाउड जुनकर ने भी मंच को संबोधित किया और राष्ट्रपति पुतिन से मुलाकात की। इटली के प्रधान मंत्री मैटियो रेन्ज़ी ने भी इस मंच में भाग लिया।[19] यूरोपीय संघ ने रूस के खिलाफ आर्थिक प्रतिबंध लगाए हैं, लेकिन इटली, हंगरी और ग्रीस ने इन प्रतिबंधों पर चर्चा की मांग की है।[20] फ्रांस के संसद के लोअर हाउस ने भी रूस पर लगे प्रतिबंधों को हटाने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया, हालांकि यह बाध्यकारी नहीं था।[21]

फिर भी, एक सीमित सीमा तक, पूर्वी यूरोप में सैन्य वृद्धि रूस के साथ संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। यह रूस-नाटो के पारस्परिक संबंधों , सहयोग और सुरक्षा की संस्थापक अधिनियम, 1997 की भावना के खिलाफ प्रतीत होता है। रूस और नाटो ने 13 जुलाई, 2016 को शिखर सम्मेलन के फैसले पर चर्चा करने के लिए एनआरसी की बैठक आयोजित की।[22] नाटो में रूस के स्थायी प्रतिनिधि एलेग्जेंडर ग्रुशको ने नाटो पर सैन्य दबाव बनाने का आरोप लगाया, लेकिन रूस जोखिम और तनाव कम करने के उपायों का प्रस्ताव देता है। बैठक में, रूस और नाटो अपने प्रमुख सामरिक मतभेदों को सुलझा नहीं सके। हालांकि, यह प्रस्तावित किया गया था कि बाल्टिक सागर के ऊपर उड़ान भरने के दौरान ट्रांसपोंडर का उपयोग अनिवार्य होना चाहिए, जो दो जेट्स के टकराने के जोखिम से बचा सकता है। इस बैठक को देख कर ऐसा भी लगता है कि रूस और नाटो सैन्य स्तर पर परामर्श कर सकते हैं।[23] फिनलैंड के साथ भी ऐसे उपायों पर चर्चा की गई है।[24] राष्ट्रपति पुतिन ने वारसॉ शिखर सम्मलेन से लगभग एक सप्ताह पहले 1 जुलाई 2016 को फिनलैंड का दौरा किया। शीत युद्ध में फिनलैंड ने तटस्थता बनाए रखी थी, जो अब नाटो के करीब जाता नज़र आ रहा है। रूस ने अपनी नाराजगी जाहिर की है। इसी तरह के उपाय, जैसे कि बाल्टिक सागर के ऊपर उड़ान भरते समय सैन्य विमान पहचान यन्त्र बंद नहीं करेंगे , द्विपक्षीय बैठक में प्रस्तावित किए गए थे।[25]

यूक्रेन में जारी संघर्ष रूस और नाटो के बीच विवाद का मसला बन गई है। संकट को हल करने के लिए रूस और यूरोपीय संघ, और रूस और अमेरिका के बीच राजनीतिक प्रयास शुरू किए गए हैं। वारसॉ शिखर सम्मलेन में, नाटो ने रक्षा क्षेत्र में सुधार की सुविधा प्रदान करने के लिए सहायता जारी रखने और यूक्रेन में सशस्त्र बलों को विकसित करने का निर्णय लिया। नाटो-यूक्रेन आयोग की एक बैठक में, नाटो के नेताओं ने यूक्रेन की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के लिए समर्थन व्यक्त किया और रूस द्वारा क्रीमिया के अवैध और नाजायज राज्य-हरण को मान्यता ना देने पर बल दिया ।

उन्होंने सभी दलों से मिन्स्क समझौतों को पूरी तरह से लागू करने का निवेदन किया।[26] पर फिर भी, इन समझौतों के उल्लंघन की सूचना मिली है। वारसॉ शिखर सम्मलेन से पहले, रूसी राष्ट्रपति पुतिन, जर्मन चांसलर एंजेला मर्केल और फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रांन्कोइस हॉलैंड ने पूर्वी यूक्रेन में युद्ध विराम के उल्लंघन के बारे में टेलीफोन पर वार्ता की थी।[27] अमेरिकी विदेश मंत्री जॉन केरी ने 14 जुलाई, 2016 को राष्ट्रपति पुतिन के साथ यूक्रेन संकट और मिन्स्क समझौतों के कार्यान्वयन पर चर्चा की। रूस ने यूक्रेन पर डोनेट्स्क और लुगांस्क के साथ वास्तविक प्रत्यक्ष संवाद संगठन सहित मिन्स्क समझौतों पर कार्यान्वयन नहीं करने का आरोप लगाया, जो डोनेट्स्क और लुगांस्क लोक गणराज्यों को विशेष दर्जा देते हुए राजक्षमा प्रदान करने और स्थानीय चुनावों पर संयुक्त रूप से कानून बनाने के सन्दर्भ में था।[28] रूस और अमेरिका ने सीरिया और यूक्रेन में सहयोग के क्षेत्रों की तलाश की। दोनों ने सहयोग के संभावित क्षेत्रों पर चर्चा की जो सीरिया के घटनाक्रमों में अंतर ला सकता है।[29]

नाटो-यूरोपीय संघ सहयोग

नाटो और यूरोपीय संघ ने हाइब्रिड युद्ध नीति, साइबर सुरक्षा, रक्षा उद्योग और अनुसंधान और विकास के क्षेत्रों में अपने सहयोग को बढ़ाने का फैसला किया।[30] नाटो और यूरोपीय संघ द्वारा जारी संयुक्त घोषणा पत्र में उल्लिखित है, "एक मजबूत नाटो और एक मजबूत यूरोपीय संघ एक-दूसरे को मजबूत बनाता है।"[31] यह बताता है कि नाटो और यूरोपीय संघ को 'अस्थिरता को दूर करना, विश्लेषण, निवारण और प्रारंभिक पहचान पर एक साथ काम करना, समय पर सूचना साझा करने के माध्यम से और यथासंभव, कर्मचारियों के मध्य सूचनाएं साझा करके; और रणनीतिक संचार तथा प्रतिक्रिया पर सहयोग करके तुरंत हाइब्रिड खतरों का मुकाबला करने की (अपनी) क्षमता को बढ़ाने की जरूरत है।[32] गैर-सैन्य आयाम भी हाइब्रिड युद्ध नीति का हिस्सा है और वर्तमान में नाटो इसे संबोधित करने में सक्षम नहीं है।[33] नाटो और यूरोपीय संघ की सदस्यता अतिव्यापी हैं। दोनों के लगभग 22 सदस्य समान हैं। दोनों के बीच सहयोग बढ़ाने का उद्देश्य हाइब्रिड युद्ध नीति और साइबर सुरक्षा की प्रकृति के साथ विकसित हो सकता है। यूरोपीय संघ में हाइब्रिड युद्ध नीति के राजनीतिक और सामाजिक पहलुओं का कार्यान्वयन करने की क्षमता है, और इन क्षेत्रों में व्यापक अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देता है। प्रवासियों के अंतर्प्रवाह को रोकने के लिए यूरोपीय संघ को नाटो के समर्थन की आवश्यकता है। यूरोपीय तट रक्षक एजेंसियां या सदस्य राज्यों की एजेंसियां प्रवासन के संकट से प्रभावी रूप से निपटने में सक्षम नहीं हैं। जर्मनी, ग्रीस और तुर्की ने नाटो से मदद मांगी। संयुक्त घोषणा में प्रवासन का उल्लेख है, और यूरोपीय संघ और नाटो 'परिचालन सहयोग' पर ध्यान केंद्रित करते हैं और वे 'समुद्री स्थितिजन्य जागरूकता' और 'गतिविधियों के आपसी सुदृढीकरण' के क्षेत्रों में अपने सहयोग को बढ़ावा देने पर सहमत हुए।[34] यूरोपीय संघ और नाटो तेजी से कार्यान्वयन पर बल देते है। यूरोपीय बाहरी कार्रवाई सेवा (ईईएएस) और नाटो अंतर्राष्ट्रीय कर्मचारी समन्वय विकसित करेंगे और कार्यान्वयन की दिशा में कदम उठाएंगे।

अफ़गानिस्तान में लंबे समय की उपस्थिति

राजनीतिक परिवर्तन और अफ़गान राष्ट्रीय सुरक्षा बलों को कमान हस्तांतरित करने के बाद, अफ़गानिस्तान में सुरक्षा स्थिति को स्थिर किया जाना बाकी है। देश लगातार विद्रोही हमलों का सामना कर रहा है। राष्ट्रपति अशरफ घनी ने शांति और स्थिरता बहाल करने के लिए तालिबान से सामंजस्य स्थापित करने की अपील की। उन्होंने तालिबान को बातचीत के लिए मजबूर करने के लिए क्षेत्रीय देशों से सहायता मांगी। उनके प्रयासों को शुरुआत में सफलता मिली, उदाहरण के लिए, तालिबान और अफ़गान सरकार ने जुलाई 2015 में पाकिस्तान में शांति वार्ता की, जिसमें अमेरिकी और चीनी अधिकारियों ने भाग लिया। यह भी सूचना मिली थी कि कुछ अफ़गान महिला सांसदों और हाई पीस काउंसिल की सदस्य ने जून 2015 को नॉर्वे में तालिबान के प्रतिनिधियों के साथ वार्ता की थी।[35] अफ़गान के अधिकारियों और तालिबान ने भी संयुक्त अरब अमीरात और कतर में अनौपचारिक वार्ता की।[36] लेकिन, सुलह की प्रक्रिया को कोई बड़ी सफलता नहीं मिली । अप्रैल 2016 में विद्रोही हमले के बाद, ऐसा लगा कि अफ़गान के राष्ट्रपति अशरफ घनी ने अपना रुख बदल दिया है।[37] उन्होंने पाकिस्तान से कहा कि वह 'पाकिस्तान में स्थित तालिबान के अभयारण्यों और नेताओं के खिलाफ सैन्य कार्रवाई करे'।[38] तालिबान ने अब अपना रुख मजबूत कर लिया है और विदेशी सेनाओं को पूरी तरह से हटाने की मांग की है ।[39] सुलह प्रक्रिया का भाग्य, इस प्रकार अनिश्चित प्रतीत होता है। राजनीतिक प्रयासों के परिणामस्वरूप आधारभूत परिणाम नहीं मिले। अफ़गान राष्ट्रीय सुरक्षा बल भी सुरक्षा चुनौतियों से निपटने में पूरी तरह से प्रभावी नहीं पाए गए। नाटो ने 9/11 हमलों के बाद से एक दशक से अधिक समय तक देश में अपनी उपस्थिति बनाए हुए है।

अफ़गानिस्तान के राष्ट्रपति घनी और सीईओ अब्दुल्ला अब्दुल्ला ने वारसॉ में आयोजित नाटो शिखर सम्मेलन में भाग लिया। संकल्प सहायता मिशन को 2016 के बाद भी जारी रखने का निर्णय लिया गया। नाटो ने निधि प्रदान करने का निर्णय लिया और आश्वासन दिया कि नाटो की सेना देश में मौजूद रहेगी। नाटो के सहयोगियों ने शपथ की कि वे अफ़गान राष्ट्रीय सुरक्षा बलों के प्रशिक्षण के लिए अगले तीन वर्षों तक प्रति वर्ष लगभग एक बिलियन अमेरिकी डॉलर की रकम देंगे। कथित तौर पर, देश में लगभग 12,000 नाटो सैनिक मौजूद हैं।[40]

अफ़गानिस्तान में सैन्य उपस्थिति को बनाए रखने के संबंध में नाटो के निर्णय को पश्चिम एशिया में बदलती सुरक्षा गतिशीलता और ईरान के साथ यूरोप के बढ़ते जुड़ाव के रौशनी में भी देखा जा सकता है। जुलाई 2015 में हुए परमाणु समझौते के बाद ईरान के साथ आर्थिक संबंधों का विस्तार करने के लिए यूरोपीय देश काफी उत्सुक हैं। दूसरा, यह भी आशंका है कि आईएसआईएल अफ़गानिस्तान के अस्थिर राजनीतिक और सुरक्षा परिदृश्य का दुरुपयोग कर सकता है। तीसरा, संकट विस्थापन का कारण बनता है; यूरोप प्रवासी दबाव को कम करना चाहता है। 2015 में जर्मनी में अफ़गान के शरण प्रार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई।[41] जर्मनी ने अफ़गान के शरण प्रार्थियों को वापस

लौटा दिया;[42] अफ़गानियों को यूरोप प्रवास करने से हतोत्साहित करने के लिए मीडिया अभियान चलाया गया। इसलिए, यूरोपीय देशों के लिए भूस्थैतिक और भू-आर्थिक दोनों उद्देश्यों के लिए अफ़गानिस्तान में स्थिरता और शांति होना आवश्यक है।

मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका में प्रयासों को बढ़ाना

नाटो ने अपनी सीमाओं से आगे स्थिरता लाने का फैसला किया है। आईएसआईएल से आतंकवाद के खतरे नाटो देशों के लिए चिंता का कारण हैं। यद्यपि आईएसआईएल ने एक बड़ा क्षेत्र खो दिया है, पर फिर भी यह हिंसा का प्रकोप बरसाने और आतंकी हमला करने वाला एक शक्तिशाली संगठन बना हुआ है।[43] नाटो ने इराक में सुरक्षा बलों को प्रशिक्षित करने और आईएसआईएल का सामना करने के लिए वैश्विक गठबंधन का समर्थन करने के लिए हवाई चेतावनी और नियंत्रण प्रणाली (एडब्ल्यूएसीएस) विमान का उपयोग करने का निर्णय लिया है।[44] क्योंकि यूरोपीय देशों ने अपने पड़ोस में राजनीतिक अस्थिरता और युद्ध के कारण अभूतपूर्व प्रवासन संकट देखा है, नाटो ने प्रवासन के प्रवाह और मानव तस्करी को नियंत्रित करने में सहायता करने में अपनी भूमिका को आगे बढ़ाया है। नाटो के सदस्य भूमध्य सागर में सैन्य निगरानी बढ़ाना चाहते हैं। नाटो के नेताओं ने फैसला किया कि ऑपरेशन सी गार्डियन का दायरा काफी विस्तृत होगा, जिसमें स्थितिजन्य जागरूकता प्रदान करना, तस्करी और आतंकवाद का मुकाबला करना, नौचालन की स्वतंत्रता को बनाए रखना और क्षेत्रीय क्षमता निर्माण में योगदान करना शामिल है।[45]

नाटो ने लीबिया में संयुक्त राष्ट्र द्वारा समर्थित सरकार का समर्थन किया। नाटो ने नेशनल एकॉर्ड की सरकार को देश में एक वैध सरकार के रूप में मान्यता दी। शिखर सम्मेलन से कुछ सप्ताह पहले, लीबिया के विदेश मंत्री मोहम्मद तह सियाला ने नाटो के महासचिव से लीबिया में राजनीतिक और सुरक्षा स्थिति पर चर्चा की। नाटो और लीबिया की नेशनल एकॉर्ड सरकार ने देश के समक्ष प्रस्तुत सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए सुरक्षा सहयोग पर चर्चा की। यूरोपीय देश राजनीतिक अस्थिरता, जिसके परिणामस्वरूप आतंकियों की घुसपैठ और प्र वासन को लेकर काफी चिंतित हैं। नाटो से सहायता प्राप्त यूरोपीय देशों ने प्रवासी दबाव को कम करने और मानव तस्करों पर अंकुश कसने के लिए सुरक्षा बढ़ा दी है। उन्होंने आर्थिक सहायता प्रदान की है और लीबियाई सुरक्षा बलों के क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण में सहायता करने का प्रस्ताव भी दिया है। अमेरिका और यूरोपीय देश अब लीबिया सरकार को हथियारों की आपूर्ति करने के इच्छुक हैं। हालांकि, यह आशंका है कि ये हथियार आतंकवादियों या गलत समूहों के हाथ लग सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र ने लीबिया में हथियारों के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया है, हालांकि, अमेरिका ने ये भी कहा कि अपवाद की गुंजाइश है और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय नेशनल एकॉर्ड की सरकार का समर्थन करेगा।[46]

मध्य पूर्व में राजनीतिक अस्थिरता और सुरक्षा संकट ने नाटो को अपनी रणनीति पर दुबारा विचार करने के लिए मजबूर किया। यूरोपीय देश मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका के कुछ देशों में राजनीतिक अस्थिरता और सामाजिक अराजकता के परिणामों का सामना कर रहे हैं। इस क्षेत्र में बड़ी शक्तियों के मध्य शत्रुता बनी हुई है , सैन्य हस्तक्षेप शांति और व्यवस्था नहीं ला सके। यूरोपीय देश इस क्षेत्र में स्थिरता लाने के प्रयास कर रहे हैं। पर फिर भी, उनके लिए अब भी असल स्थितियों पर असरदार कार्रवाई करनी बाकी है। नाटो भी मध्य और पूर्वी यूरोप और रूस के साथ अपने संबंधों को लेकर व्यस्त था। हालांकि, एक दशक पहले, इसने मध्य पूर्व में अपना जुड़ाव बढ़ाने का संकेत दिया था।[47] लेकिन वर्तमान स्थिति कहीं अधिक जटिल है। युद्धग्रस्त देश - सीरिया, इराक और लीबिया - में सामान्य स्थिति की बहाली का कोई संकेत नहीं नज़र आ रहा। वारसॉ शिखर सम्मेलन के साथ-साथ रूस के साथ राजनयिक वार्ता में क्षेत्र में स्थिरता और गति लाने के लिए बहुपक्षीय सहयोग के महत्व पर बल दिया गया।

निष्कर्ष

नाटो ने रूस के प्रति 'निरोध और संवाद' का मिश्रित रुख अपनाया है। यह निरोध को बढ़ाता रहेगा, लेकिन, संकटों के राजनीतिक समाधान तलाशने के लिए बातचीत करेगा। यह स्पष्ट नहीं है कि यह रूस के साथ तनाव को कम करने में कैसे मदद करेगा। कुछ यूरोपीय देशों को यह भी एहसास है कि अपनी सैन्य ताकत दिखाने से पूर्वी यूरोप में सुरक्षा स्थिति सुधारने में कोई मदद नहीं मिलेगी। हालांकि, बाल्टिक देश और पोलैंड इस क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय बटालियन पर जोर देते हैं। रूस ने स्पष्ट रूप से कहा है कि टकराव की नीति से सुरक्षा स्थिति और खराब होगी।

वारसॉ में, नाटो के नेताओं ने यूरोप की सुरक्षा समस्याओं से आगे की स्थितियों का अवलोकन किया है। नाटो ने अफ़गानिस्तान में अपनी उपस्थिति बनाए रखने का फैसला किया है, जो देश में सुरक्षा बनाए रखने में मददगार हो सकता है। अफ़गान बलों की क्षमता को मजबूत करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहायता की आवश्यकता है। हालांकि, तालिबान ने अफ़गान सरकार के साथ सुलह वार्ता के लिए तैयार होने की शर्त के रूप में सभी विदेशी सैनिकों को वापस भेजने की मांग की है। अफ़गानिस्तान की भौगोलिक स्थिति महत्वपूर्ण है। एक प्रभावी और मजबूत अफ़गान सुरक्षा बल ना केवल देश में विद्रोहियों से मुकाबला करने बल्कि आईएसआईएल के खतरों का भी मुकाबला करने के लिए आवश्यक है।

मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका भी नाटो के जुड़ाव के लिए एक प्राथमिकता क्षेत्र होगा। यूरोपीय देशों को सीरिया और इराक में चल रहे युद्ध और राजनीतिक अस्थिरता से खतरा है। आतंकवादी समूह यूरोपीय देशों में हिंसा फैलाने और हमला करने के लिए इस नाजुक माहौल का लाभ उठाते हैं। लीबिया भी चिंता का एक कारण है। आईएसआईएल के खतरे के अलावा, प्रवासी और शरणार्थी लीबिया

के रास्ते यूरोप में प्रवेश करते हैं। नाटो ने पहले ही भूमध्य सागर में मानव तस्करों का मुकाबला करने के लिए सहायता प्रदान की है। संक्षेप में, वारसॉ शिखर सम्मेलन में बड़े कदम उठाए गए हैं, जो यूरोप, आसपास और उससे आगे के क्षेत्रों में राजनीतिक और सुरक्षा परिदृश्यों के लिए दीर्घकालिक रूप से प्रभावी साबित होंगे।

****

डॉ दिनोज के उपाध्याय इंडियन काउंसिल ऑफ़ वर्ल्ड अफेयर्स, नई दिल्ली के रिसर्च फेलो हैं।

अस्वीकरण: इसमें व्यक्त किए गए विचार लेखक के हैं और ये परिषद के विचारों को नहीं दर्शाते हैं।

अंत टिप्पण:

---

1 "Landmark NATO Summit to Begin in Warsaw," *NATO*, July 7, 2016, http://www.nato.int/cps/en/natohq/news_133170.htm (Accessed July 8, 2016)
2 Ibid.
3 "Russia Proposes to NATO Safety Measures in Baltics," *Deutsche Welle*, July 14, 2016, http://www.dw.com/en/russia-proposes-to-nato-safety-measures-in-baltics/a-19398922 (Accessed on July 14, 2016)
4 Jim Yardley and Gaia Pianigiani, "Three Days, 700 Deaths on Mediterranean as Migrant Crisis Flares," *The New York Times,* May 29, 2016, http://www.nytimes.com/2016/05/30/world/europe/migrants-deaths-mediterranean-libya-italy.html?_r=0 (Accessed on July 12, 2016)
5 Brooks Tigner, "EU Ready to Provide Security Reform Package to Libya," *IHS Jane's Defence Weekly,* April 19, 2016, http://www.janes.com/article/59620/eu-ready-to-provide-security-reform-package-to-libya (Accessed on July 14, 2016).
6 Warsaw Summit Communique, NATO, July 9, 2016, http://www.nato.int/cps/en/natohq/official_texts_133169.htm (Accessed on July 10, 2016)
7 "Prime Minister Szydło Hails NATO Summit Success for Poland," *Radio Poland*, July 11, 2016, http://www.thenews.pl/1/10/Artykul/261227,Prime-Minister-Szydlo-hails-NATO-summit-success-for-Poland (Accessed on July 12, 2016)
8 "NATO Summit: A Historic Day for the Security of Lithuania and the Baltic Region," President of Republic of Lithuania, July 8, 2016, https://www.lrp.lt/en/press-centre/press-releases/nato-summit-a-historic-day-for-the-security-of-lithuania-and-the-baltic-region/25642 (Accessed July 12, 2016)
9 The President of Latvia: The Values of NATO Must be Fostered to Confront Modern Threats, July 11, 2016 http://www.president.lv/pk/content/?art_id=24233 (Accessed July 12, 2016); "Estonian PM: Decision to Increase NATO Presence is Breakthrough," *the Baltic Times*, July 9, 2016, http://www.baltictimes.com/estonian_pm__decision_to_increase_nato_presence_is_breakthrough/ (Accessed on July 12, 2016)
10 Prime Minister Justin Trudeau Meets President Raimonds Vējonis Of Latvia, Warsaw, Poland July 9, 2016, http://pm.gc.ca/eng/news/2016/07/09/prime-minister-justin-trudeau-meets-president-raimonds-vejonis-latvia (Accessed on July 9, 2016).
11 "Russian Senator: NATO Demonstrates Open Aggression on Warsaw Summit's First Day," *TASS*, July 8, 2016, http://tass.ru/en/politics/887203 (Accessed on July 9, 2016).
12 "NATO Holding Summit of Deception in Warsaw," *TASS*, July 9, 2016, http://tass.ru/en/politics/887215 (Accessed on July 9, 2016)
13 "Stoltenberg: "Russia Cannot and Should Not be Isolated"," *Deutsche Welle*, July 8, 2016, http://www.dw.com/en/stoltenberg-russia-cannot-and-should-not-be-isolated/av-19389503 (Accessed on July 8, 2016)
14 Julian Borger, "NATO-Russia Council Talks Fail to Iron Out Differences," *The Guardian*, April 20, 2016 , https://www.theguardian.com/world/2016/apr/20/nato-russia-council-talks-fail-iron-out-differences-jens-stoltenberg (Accessed on July 14, 2016)
15 "Why the Warsaw Summit Matters," *NATO*, July 8, 2016, http://www.nato.int/cps/en/natohq/opinions_133257.htm (Accessed on July 9, 2016).

16 Ruth Fraňková, "Czech President Argued for Maintaining Dialogue with Russia at NATO Summit," *Radio Praha*, July 9, 2016, http://www.radio.cz/en/section/news/czech-president-argued-for-maintaining-dialogue-with-russia-at-nato-summit (Accessed on July 14, 2016).
17 "France Says Russia a Partner, Not a 'Threat', *Al Arabiya,* July 8, 2016, http://english.alarabiya.net/en/News/middle-east/2016/07/08/France-says-Russia-a-partner-not-a-threat-.html (Accessed on July 14, 2016).
18 "Putin Urges EU to Restore Cooperation with Russia, Says Moscow is Ready to Meet Halfway," *RT*, June 17, 2016, https://www.rt.com/news/347102-putin-eu-russia-cooperation/ (Accessed on July 12, 2016)
19 Kathrin Hille, Alex Barker and Stefan Wagstyl, "Putin Seeks to Re-engage Europe at St Petersburg Forum," *Financial Times*, June 16, 2016, http://www.ft.com/cms/s/0/c32119f4-3315-11e6-ad39-3fee5ffe5b5b.html#axzz4EGJ2uO00 (Accessed on July 12, 2016).
20 "Russia Faces Another 6 Months of EU Sanctions," *Financial Times*, June 9, 2016, http://www.ft.com/cms/s/0/fb0d69ae-2e2d-11e6-bf8d-26294ad519fc.html#axzz4Ffzkf143 (Accessed on July 14, 2016).
21 "French Lawmakers Adopt Non-binding Proposal to Lift Russia Sanctions," *Reuters,* April 28, 2016, http://uk.reuters.com/article/uk-ukraine-crisis-france-idUKKCN0XP1C7 (Accessed on July 14, 2016).
22 NATO-Russia Council meeting to focus on NATO military build-up in east — diplomat, TASS, July 12, 2016, http://tass.ru/en/politics/887675 (Accessed on July 12, 2016)
23 Andrei Akulov, "Russia-NATO Council Meeting: Differences Unbridged," *Strategic Cultural Foundation,* July 18, 2016, http://www.strategic-culture.org/news/2016/07/18/russia-nato-council-meeting-differences-unbridged.html (Accessed July 20, 2016).
24 "Russian Envoy: NATO Turns Poland, Baltic States into Bridgehead for Pressure on Moscow," TASS, July 13, 2016, http://tass.ru/en/politics/888041 (Accessed on July 14, 2016).
25 Denis Dyomkin and Tuomas Forsell, "Putin Hints Russia Will React if Finland Joins NATO," *Reuters*, July 1, 2016, http://www.reuters.com/article/us-russia-finland-nato-putin-idUSKCN0ZH5IV (Accessed on July 14, 2016).
26 "NATO Leaders Confirm Strong Support for Ukraine," NATO, July 9, 2016, http://www.nato.int/cps/en/natohq/news_133806.htm?selectedLocale=en (Accessed on July 9, 2016).
27 "Telephone Conversation with Angela Merkel and Francois Hollande," President of Russia, July 8, 2016, http://en.kremlin.ru/events/president/news/52494 (Accessed on July 9, 2016).
28 "Putin to Receive Kerry for Talks on Syria, Ukraine," *TASS,* July 14, 2016, http://tass.ru/en/politics/888080 (Accessed on July 14, 2016).
29 President of Russia, "Meeting with US Secretary of State John Kerry," July 14, 2016, http://en.kremlin.ru/events/president/news/52516 (Accessed July 20, 2016).
30 Joint Declaration by the President of the European Council, the President of the European Commission, and the Secretary General of the North Atlantic Treaty Organization, July 8, 2016, http://www.nato.int/cps/en/natohq/official_texts_133163.htm (Accessed on July 11, 2016).
31 Ibid.
32 Ibid.
33 President Niinistö at the Warsaw Summit: Deterrence and dialogue in balance in NATO's relations with Russia, The President of the Republic of Finland, July11, 2016, http://www.tpk.fi/Public/default.aspx?contentid=348792&nodeid=44809&contentlan=2&culture=en-US (Accessed on July 12, 2016).
34 Joint Declaration by the President of the European Council, the President of the European Commission, and the Secretary General of the North Atlantic Treaty Organization, July 8, 2016, http://www.nato.int/cps/en/natohq/official_texts_133163.htm (Accessed on July 11, 2016).
35 Mohammad Halim Karimi, "Female MPs in Talks with Taliban Reps in Norway," *Pajhowk Afghan News*, June 3, 2015, http://www.pajhwok.com/en/2015/06/03/female-mps-talks-taliban-reps-norway (Accessed on July 13, 2016)
36 Sharif Amiri, Taliban Talks in Dubai Constructive: Source*, Tolo News*, June 7, 2016, http://www.tolonews.com/en/afghanistan/19891-taliban-talks-in-dubai-constructive-sour (Accessed on July 14, 2016); Margherita Stancati and Habib Khan Totakhil, "Afghan Officials Meet With Taliban in Qatar," *The Wall Street Journal,* May 2, 2015, http://www.wsj.com/articles/afghan-officials-to-meet-with-taliban-in-qatar-1430565239 (Accessed on July 14, 2016).
37 Tahir Khan, "Will No Longer Seek Pakistan's Help in Peace Talks: Afghan President," *The Express Tribune,* April 25, 2016, http://tribune.com.pk/story/1091321/will-no-longer-seek-pakistans-help-in-peace-talks-says-afghan-president/ (Accessed on 15 July, 2016); Mujib Mashal, "Afghan President Demands Pakistan Take Military Action Against Taliban," *The New York Times,* April 25, 2016, http://www.nytimes.com/2016/04/26/world/asia/afghanistan-pakistan-taliban.html (Accessed on July 15, 2016)
38 "Ghani Asks Pakistan to Take Army Action Against Taliban," *Dawn*, April 26, 2016 http://www.dawn.com/news/1254451 (Accessed on July 14, 2016).
39 Tariq Majidi, "In Eid al-Fitr Message, Taliban Leader Urges Foreign Troops Pullout for Peace," *Tolo News,* July 2, 2016, http://www.tolonews.com/en/afghanistan/26073-in-eid-al-fitr-message-taliban-leader-urges-foreign-troops-pullout-for-peace (Accessed on July 15, 2016).
40 "NATO Extends Mission in Afghanistan," *Deutsche Welle*, July 9, 2016, http://www.dw.com/en/nato-extends-mission-in-afghanistan/a-19390071 (Accessed July 9, 2016).

41 “Afghan Refugees Could Get Money to Return Home,” *Deutsche Welle*, February 1, 2016, http://www.dw.com/en/afghan-refugees-could-get-money-to-return-home/a-19016738 (Accessed on July 14, 2016).
42 “Germany Sends Afghan Refugees Home,” *Deutsche Welle*, February 24, 2016, http://www.dw.com/en/germany-sends-afghan-refugees-home/a-19070750 (Accessed on July 14, 2016).
43 “Islamic Stateless?,” *The Economist,* July 9, 2016, http://www.economist.com/news/middle-east-and-africa/21701721-jihadists-are-losing-their-caliphate-they-remain-deadl-islamic-stateless (Accessed on July 13, 2016).
44 “NATO Steps Up Efforts to Project Stability and Strengthen Partners,” NATO, July 9, 2016 http://www.nato.int/cps/en/natohq/news_133804.htm?selectedLocale=en (Accessed on July 9, 2016).
45 “NATO Steps up Efforts to Project Stability and Strengthen Partners,” NATO, July 9, 2016, http://www.nato.int/cps/en/natohq/news_133804.htm (Accessed on July 14, 2016).
46 Valentina Pop, “U.S. and Others Open to Arming Libyan Government,” *The Wall Street Journal,* May 16, 2016, http://www.wsj.com/articles/kerry-foreign-ministers-hold-libya-talks-1463400980 (Accessed on July 12, 2016).
47 Helle Malmvig, A New Role for NATO in the Middle East: Assessing Possibilities and Barriers for An Enhanced Mediterranean Dialogue, DIIS Report 2005 (Accessed on July 5, 2016)

*****